अपघात प्रतिबंधक यंत्र

वा	३	५
का	त्रा	७
जा	रा	९

धन संरक्षक यंत्र

त्रि	वा	कि
लक्ष्मी	राव	कीम
स्थिर	कवच	त्राम

समस्या निवारण यंत्र

दा	वा	त्रीत्रा
काः	पीः	वीत्रा
त्राः	वीः	त्रीजा

यश यंत्र

सू	वू	ला
त्रु	जा	वा
क्रुम	क्रुम	क्रुम

ॐकार संप्रदाय™
(एक आध्यात्मिक पथ)

KARYA SE KRANTI

ॐकार संप्रदाय शक्तिपीठ आश्रम
सेवा समर्पण प्रतिष्ठान

विश्वस्त संस्था नोंदणी क्र.: ई/18590/अहमदाबाद) 80-जी अंतर्गत करमुक्त (5313/09-10)
विश्वस्त संस्था नोंदणी क्र.: 170 (बी) (1) (ए) (vi) अर्ज 990 / 990-ईझेड / 990-एन-यूएसए

ॐकार संप्रदायाचे प्रणेता व संस्थापक
001, तळ मजला, आंगी फ्लॅट, अन्नपूर्णा पार्टी प्लॉटच्या समोर,
नवीन विकास गृह मार्ग, पालडी, अहमदाबाद-380007, गुजरात, भारत.
मोबाईल : 8758999297, 9376334289, 9429208997
E-mail: omkarsampraday@gmail.com
Website: www.omkarsampraday.com

www.printvision.in

ॐकार संप्रदायाचे
प्रणेता व संस्थापक
अद्‌भुत ॐकार चालीसा
मंत्रयुग परिवर्तक परमपूज्य संत श्री
ॐऋषि प्रितेशभाई
यांच्याद्वारा निर्मित

(कोणत्याही अडीअडचणीच्या वेळी या ओमकार चालीसेचा नेहमीच उपयोग होईल)

ॐकार चालीसा

विना मूल्य (निःशुल्क)

मंत्रयुग परिवर्तक परमपूज्य संत श्री ॐऋषी प्रितेशभाई यांच्याद्वारा निर्मित अद्भुत ॐकार चालीसा

• विश्वशांती मंत्र •

॥ ॐ शांती शांती विश्वमान् कुरु कुरु वाम स्वाहा ॥

(या मंत्राचा रोज 27 वेळा जप करा व त्यानंतर ॐकार चालीसाचा पाठ करा)

ॐकार चालीसा

• साखी •

सद्गुरु शरण में लीजीऐ, दीजे वो वरदान ।
ॐकार के तेज से, मिटे तिमीर अज्ञान ॥

जय ॐकार सृष्टि के कर्ता, नादब्रह्म त्रिभुवन के भर्ता 1
तीन गुणों के तुम हो स्वामी, परमपिता हे अंतर्यामी 2
शास्त्र-पुराण अक्षर के आदि, ब्रह्मा, हरि, हर और सनकादि 3
जपत निरंतर ॐ की माला, सृजक, संहारक, रखवाला 4
सर्व मंत्र में ॐ है आगे, कुंडलिनी मूल से जागे 5
ॐ जपत ही ध्वनि वो जागे, भूतपिशाच मुठ लई भागे 6
शब्द-सूर सब ॐ से प्रकटत, ॐकार है नाद अनाहत 7
योगी ध्यान में रटे निरंतर, ॐ है सत्य, शिव और सुंदर 8
रिद्धि, सिद्धि हैं ॐ की दासी, पडे नहीं गल जम की फांसी 9
ग्रहदशा सब ॐ सुधारे, जीवन में हो वारे-न्यारे 10
मन-क्रम-वचन की होवे शुद्धि, प्रगटे ॐ से सब सद्बुद्धि 11
आत्म-अनात्म विवेक जगावे, अंतःकरण के दोष मिटावे 12
अगम-निगम के भेद बतावे, पिंड में ही ब्रह्मांड दिखावे 13
प्रणव मंत्र की महिमा भारी, जपो सदैव ॐ नरनारी 14
ॐ नमः का मंत्र जो ध्यावे, तीन लोक की संपत पावे 15
ॐ त्रित्रांश क्रिया की शक्ति, इसी जन्म में दे दे मुक्ति 16
जीवन में भर देता उर्जा, ॐ सा मंत्र नहीं कोई दूजा 17
ॐ कार है प्राण चेतना, सुर-नर-मुनिवर करे वंदना 18
प्रणव मंत्र है गुरु समाना, तिमिर मिटावे जो अज्ञाना 19
ज्ञान प्रकाश हृदय में कर दे, चिदानंद अंतर में भर दे 20
सात चक्रों का कर दे भेदन, ब्रह्म रंध्र में हो प्राण का स्थापन 21
योगशक्ति का ॐ हे द्योतक, सत् चित् आनंद का है वाचक 22
वेद उवाच हरि ॐ तत् सत्, जग है मिथ्या ॐ ही है सत् 23
ॐ है गंगाजल सा पावन, कर देता है शुद्ध जो तन-मन 24
ॐकार है चक्र सुदर्शन, काटे सर्व पाप के बंधन 25
द्रश्य पदार्थ सर्व विनाशी, कालातीत ॐ अविनाशी 26
ॐ कार को रामने ध्याया, जनक सभा में धनुष उठाया 27
गोविंद ने जब गीता गाई, ॐ ने अपनी पहचान बताई 28
निराकार-साकार में राजे, सृष्टि के कण-कण में विराजे 29
धर्म-अर्थ-काम और मुक्ति, ॐ से मिले सर्व संतुष्टि 30
ॐ के बिना है यज्ञ अपूर्ण, ॐ से ही स्वाहा संपूर्ण 31
ॐकार को जिसने ध्याया, लगी उसे ना जग की माया 32
लखचौरासी फंद छुडाया, मोक्षद्वार पे ॐ ले आया 33
पंचमहाभूतो में समाया, चारो अंतःस्करण में छाया 34
ॐकार गायत्री विधा में, अमर तत्त्व है ॐ सुधा में 35
ॐ कार जो गावे निसदिन, सारे कष्ट मिटे हर पल छिन 36
शंकर के डमरु में गाजे, कृष्ण की मुरली में बाजे 37
पार्श्वनाथ भगवान के भीतर, गूंजे मंत्र ॐ ही निरंतर 38
"ॐ ऋषि" समान सर्व आत्मा, ॐ है सूर्य सरिस परमात्मा 39
जो यह पढे ॐकार चालीसा, सर्व कार्य हो सिद्ध हमेशा 40

• साखी •

ॐपुरुष सृष्टिकरन, हे परब्रह्म का रूप ।
ॐकार को जो रटे, होवे ब्रह्म स्वरूप ॥

॥ इति श्री ॐऋषि प्रितेशभाई विरचितं श्री ॐकार चालीसा स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥